NEERAJ®

# MEC-102

# समष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

## ( Macroeconomic Analysis )

**Chapter Wise Reference Book**
**Including Many Solved Sample Papers**

*Based on*

# I.G.N.O.U.

**& Various Central, State & Other Open Universities**

By: *Prieti Gupta*

**NEERAJ PUBLICATIONS**
*(Publishers of Educational Books)*

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

**MRP ₹ 320/-**

Content

# समष्टिगत आर्थिक विश्लेषण
## ( Macroeconomic Analysis )


Question Paper—June-2024 (Solved) ..... 1-4

Question Paper—December-2023 (Solved) ..... 1-2

Sample Question Paper–1 (Solved) ..... 1

Sample Question Paper–2 (Solved) ..... 1


| S.No. | Chapterwise Reference Book | Page |
|---|---|---|


**खण्ड-1 समष्टिगत अर्थशास्त्र के पारंपरिक दृष्टिकोण**
**(TRADITIONAL APPROACHES TO MACROECONOMICS)**

1. पारंपरिक दृष्टिकोण ..... 1
   (The Classical Approach)
2. केन्जियन मॉडल ..... 11
   (The Keynesian Model)
3. नवपारंपरिक संश्लेषण ..... 22
   (Neoclassical Synthesis)
4. अनावृत्त अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र-I ..... 31
   (Open Economy Macroeconomics-I)
5. अनावृत्त अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र-II ..... 39
   (Open Economy Macroeconomics-II)

**खण्ड-2 प्रत्याशाएं और समष्टि अर्थशास्त्र**
**(EXPECTATIONS AND MACROECONOMICS)**

6. मुद्रास्फीति और बेरोजगारी ..... 50
   (Inflation and Unemployment)
7. तर्कसंगत अपेक्षाएँ और उनके निहितार्थ ..... 61
   (Rational Expectations)

**खण्ड-3 अंतर्कालिक निर्णय प्रक्रिया**
**(INTERTEMPORAL DECISION-MAKING)**

8. उपभोग एवं परिसंपत्ति कीमतें ..... 72
   (Consumption and Asset Prices)

9. रैमसे-कैस-कूपमैनस मॉडल ..... 82
(Ramsey-Cass-Koopmans Model)

10. परस्परव्यापी पीढ़ी मॉडल..... 91
(Overlapping Generations Model)

## खण्ड-4 व्यवसाय चक्र के सिद्धांत
## (THEORIES OF THE BUSINESS CYCLES)

11. व्यापार चक्र के पारंपरिक मॉडल..... 98
(Traditional Models of Business Cycles)

12. वास्तविक व्यापार चक्र..... 106
(Real Business Cycles)

## खण्ड-5 श्रम बाजार
## (LABOUR MARKETS)

13. मौद्रिक एवं वास्तविक अनम्यताएँ..... 113
(Nominal and Real Rigidities)

14. सर्च सिद्धांत और बेरोजगारी..... 126
(Search Theory and Unemployment)

## खण्ड-6 मौद्रिक नीति के मुद्दे
## (ISSUES IN MONETARY POLICY)

15. केंद्रीय बैंक और मुद्रा की आपूर्ति..... 137
(Central Banks and the Supply of Money)

16. मौद्रिक नीति का संचालन..... 148
(Conduct of Monetary Policy)

17. नीति के मौद्रिक सिद्धांत..... 159
(Theory of Monetary of Policy)

## खण्ड-7 राजकोषीय नीति और समष्टिगत अर्थशास्त्र
## (FISCAL POLICY AND MACROECONOMICS)

18. राजकोषीय नीति..... 172
(Fiscal Policy)

19. राजकोषीय धारणीयता..... 182
(Fiscal Sustainability)

■■

# Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

*Published by:*

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

# QUESTION PAPER

***June – 2024***

*(Solved)*

## समष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

**( Macroeconomic Analysis )**

**MEC-102**

*समय : 3 घण्टे ]* *[ अधिकतम अंक : 100*

***नोट :*** *दोनों भागों में से प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए।*

### भाग-क

**नोट : इस भाग में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

**प्रश्न 1. समिष्ट अर्थशास्त्र में क्लासिकीय सिद्धांत और केन्सियन सिद्धांत की तुलना कीजिए। अपने उत्तर को प्रमाणित करने के लिए उचित आरेख का प्रयोग कीजिए।**

**उत्तर**–समष्टि अर्थशास्त्र में क्लासिकीय सिद्धांत और केन्सियन सिद्धांत दोनों प्रमुख दृष्टिकोण हैं, जो आर्थिक गतिविधियों, रोजगार और उत्पादन के बारे में विभिन्न विचारधाराएं प्रस्तुत करते हैं। यहां हम दोनों सिद्धांतों की तुलना करेंगे–

**1. बाजार में संतुलन**

**क्लासिकीय सिद्धांत**–क्लासिकीय दृष्टिकोण मानता है कि बाजार अपने आप संतुलन में पहुँच जाता है। कीमतों, मजदूरी और ब्याज दरों में लचीलापन होने से आपूर्ति और मांग के बीच संतुलन बना रहता है। इसके अनुसार, अर्थव्यवस्था हमेशा पूर्ण रोजगार के स्तर पर रहती है।

**केन्सियन सिद्धांत**–केन्स का मानना है कि बाजार में स्वाभाविक रूप से संतुलन नहीं होता। इसमें बेरोजगारी और अल्प-उत्पादन की समस्या हो सकती है। जब समग्र मांग में कमी होती है, तो अर्थव्यवस्था अपने आप संतुलन में नहीं आ पाती और सरकार को हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

**2. बेरोजगारी का दृष्टिकोण**

**क्लासिकीय सिद्धांत**–इस सिद्धांत के अनुसार बेरोजगारी अस्थायी होती है और मजदूरी दर में लचीलापन इसे ठीक कर देती है। जैसे ही बेरोजगारी बढ़ती है, मजदूरी दर कम हो जाती है और श्रम बाजार फिर से संतुलन में आ जाता है।

**केन्सियन सिद्धांत**–केन्स का मानना था कि मजदूरी में इतनी लचीलापन नहीं है कि बेरोजगारी को समाप्त कर सके। इसलिए, मांग में कमी के कारण डिमांड-डिफिसिट बेरोजगारी उत्पन्न होती है, जिसे सरकार द्वारा बढ़ी हुई सरकारी खर्च से ही ठीक किया जा सकता है।

**3. मांग का महत्त्व**

**क्लासिकीय सिद्धांत**–क्लासिकीय अर्थशास्त्रियों के अनुसार उत्पादन का निर्धारण आपूर्ति के द्वारा होता है, क्योंकि मांग अपने आप आपूर्ति के बराबर होती है।

**केन्सियन सिद्धांत**–केन्स का तर्क था कि उत्पादन का निर्धारण मांग से होता है। इसलिए, समष्टि मांग में वृद्धि करने के लिए सरकार को हस्तक्षेप करना चाहिए।

**4. सरकारी हस्तक्षेप**

**क्लासिकीय सिद्धांत**–क्लासिकीय अर्थशास्त्रियों का मानना था कि सरकार को आर्थिक क्रियाकलाप में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए क्योंकि यह बाजार की स्वचालित प्रकृति को बाधित करता है।

**केन्सियन सिद्धांत**–केन्स ने सुझाव दिया कि आर्थिक मंदी के दौरान, सरकार को मांग को प्रोत्साहित करने के लिए सार्वजनिक खर्च में वृद्धि करनी चाहिए, ताकि बेरोजगारी को कम किया जा सके और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सके।

**आरेख**

**क्लासिकीय मॉडल में**–आपूर्ति वक्र (AS) ऊर्ध्वाधर होता है, जो यह दर्शाता है कि कीमतों में बदलाव के बावजूद आपूर्ति का स्तर अपरिवर्तित रहता है।

**केन्सियन मॉडल में**–आपूर्ति वक्र (AS) क्षैतिज होता है, जो यह दर्शाता है कि मंदी के दौरान मांग में कमी होने पर उत्पादन कम हो सकता है और कीमतों में कमी नहीं होती।

इन दृष्टिकोणों के माध्यम से यह स्पष्ट है कि क्लासिकीय सिद्धांत पूर्ण रोजगार और बाजार के स्वचालित संतुलन पर आधारित है, जबकि केन्सियन सिद्धांत मांग की भूमिका को महत्त्व देता है और सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता पर बल देता है।

**प्रश्न 2. IS-LM मॉडल की संक्षिप्त रूपरेखा प्रदान कीजिए। IS और LM वक्र के बाहर काई बिन्दु क्या दर्शाता है? उपर्युक्त मॉडल में, क्या अर्थव्यवस्था स्वयं संतुलन में पहुँच जाएगी?**

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



**उत्तर–IS-LM मॉडल की संक्षिप्त रूपरेखा–**IS-LM मॉडल (Investment-Savings *और* Liquidity Preference-Money Supply) की अवधारणा अर्थशास्त्री जॉन हिक्स और एल्विन हैनसन द्वारा विकसित की गई थी। यह मॉडल मुख्यत: समष्टि अर्थशास्त्र (Macroeconomics) में अल्पकालीन आर्थिक संतुलन (Short-run Economic Equilibrium) को समझाने के लिए प्रयुक्त होता है, जिसमें वस्तु और सेवा बाजार (Goods and Services Market) तथा धन बाजार (Money Market) को एक साथ दिखाया जाता है। IS वक्र (curve) उस बिंदु को दर्शाता है जहाँ निवेश और बचत के बीच संतुलन होता है, जबकि LM वक्र उस बिंदु को दर्शाता है जहाँ पैसे की मांग और पैसे की आपूर्ति संतुलित होती है।

**IS वक्र–**IS वक्र उन सभी बिंदुओं का समूह होता है जहाँ वस्तु बाजार में मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन होता है। यह वक्र वास्तविक आय (Real Income) और ब्याज दर (Interest Rate) के बीच नकारात्मक संबंध को दर्शाता है। जब ब्याज दर घटती है, तो निवेश बढ़ता है और इस कारण मांग में वृद्धि होती है, जिससे आय भी बढ़ती है। इसलिए, IS वक्र का ढलान नकारात्मक होता है।

**LM वक्र–**LM वक्र उन सभी बिंदुओं का समूह होता है जहाँ पैसे की मांग और पैसे की आपूर्ति के बीच संतुलन होता है। यह वक्र वास्तविक आय और ब्याज दर के बीच सकारात्मक संबंध को दर्शाता है। जब आय बढ़ती है, तो धन की मांग भी बढ़ती है, जिससे ब्याज दर बढ़ती है। इसीलिए, LM वक्र का ढलान सकारात्मक होता है।

**IS और LM वक्र के बाहर का कोई बिंदु क्या दर्शाता है?**

IS और LM वक्रों के बाहर के बिंदु उस स्थिति को दर्शाते हैं, जहां अर्थव्यवस्था संतुलन में नहीं है। यदि कोई बिंदु IS वक्र के ऊपर या नीचे है, तो इसका मतलब है कि वस्तु और सेवा बाजार में मांग और आपूर्ति असंतुलित है। इसी प्रकार, यदि कोई बिंदु LM वक्र के ऊपर या नीचे है, तो इसका अर्थ है कि धन बाजार में पैसे की मांग और आपूर्ति में संतुलन नहीं है।

**उदाहरण के लिए–**

- IS वक्र के ऊपर का बिंदु दर्शाता है कि आय अधिक है, लेकिन निवेश कम है, जिससे मांग कम हो जाती है।
- IS वक्र के ऊपर का बिंदु दर्शाता है कि आय बढ़ रही है और पैसे की मांग अधिक है, जिससे ब्याज दर बढ़ जाती है।

**क्या अर्थव्यवस्था स्वयं संतुलन में पहुँच जाएगी?**

IS–LM मॉडल के अनुसार, अर्थव्यवस्था स्वत: संतुलन में पहुँच सकती है यदि बाहरी कारक स्थिर रहते हैं। जब भी कोई असंतुलन उत्पन्न होता है, तो निवेश, उपभोग, बचत और ब्याज दर जैसे कारकों में बदलाव के कारण अर्थव्यवस्था संतुलन की ओर बढ़ती है।

उदाहरण के लिए, यदि आय बढ़ती है और मांग में कमी आती है, तो निवेश बढ़ने लगता है। इसी प्रकार, अगर धन की मांग बढ़ती है, तो ब्याज दर भी बढ़ती है, जिससे पैसे की आपूर्ति संतुलित होती है।

हालांकि, अगर सरकारी नीतियाँ जैसे वित्तीय नीतियाँ (Fiscal Policy) या मौद्रिक नीतियाँ (Monetary Policy) परिवर्तित होती हैं, तो इससे संतुलन बिंदु पर प्रभाव पड़ सकता है, जिससे अर्थव्यवस्था को नए संतुलन की ओर जाना पड़ सकता है।

**प्रश्न 3. उचित आरेखों की सहायता से समझाइए कि किस प्रकार एक लोचशील विनिमय दर वाली खुली अर्थव्यवस्था में राजकोषीय नीति प्रभावशील नहीं हो सकती। ऐसी स्थितियों में सरकार के पास क्या नीतिगत विकल्प उपलब्ध है?**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-44, प्रश्न 4 तथा प्रश्न 5

**इसे भी देखें–नीतिगत विकल्प–**लोचशील विनिमय दर में राजकोषीय नीति की सीमाओं को देखते हुए, सरकार के पास निम्नलिखित विकल्प होते हैं–

**मौद्रिक नीति का उपयोग–**राजकोषीय नीति के स्थान पर सरकार मौद्रिक नीति का उपयोग कर सकती है। यह विशेष रूप से प्रभावी है, क्योंकि मुद्रा की प्रशंसा से ब्याज दर में कमी लाई जा सकती है, जो घरेलू निवेश और खपत को प्रोत्साहित करती है।

**विनिमय दर हस्तक्षेप–**सरकार मुद्रा की अत्यधिक प्रशंसा को रोकने के लिए विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप कर सकती है। इससे राजकोषीय नीति की प्रभावशीलता को बनाए रखने में मदद मिलती है, लेकिन यह विकल्प सीमित अवधि के लिए ही उपयोगी हो सकता है।

**राजकोषीय नीति का संयोजन–**राजकोषीय नीति को मौद्रिक नीति के साथ मिलाकर भी लागू किया जा सकता है, ताकि घरेलू निवेश और उत्पादन को बनाए रखा जा सके।

**निष्कर्ष–**लोचशील विनिमय दर वाली खुली अर्थव्यवस्था में राजकोषीय नीति का प्रभाव सीमित हो सकता है, क्योंकि मुद्रा की प्रशंसा बाहरी मांग को प्रभावित करती है। ऐसे में, मौद्रिक नीति का उपयोग, विनिमय दर हस्तक्षेप या दोनों का संयोजन सरकार के लिए अधिक उपयुक्त नीतिगत विकल्प हो सकते हैं।

**प्रश्न 4. मौद्रिक नीति के कार्यान्वयन के लिए सरकार के पास उपलब्ध नीति उपस्करों पर चर्चा कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-158, प्रश्न 5

**भाग-ख**

**नोट : इस भाग में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

**प्रश्न 5. लुकास के आपूर्ति फलन की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए। अल्पकाल में यह ऊर्ध्वमुखी ढलान (ऊपर की ओर ढलान) वाला क्यों होता है?**

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

# Sample Preview of The Chapter

*Published by:*

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

# समष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

## ( Macroeconomic Analysis )

## पारंपरिक दृष्टिकोण

## ( The Classical Approach )

1

### परिचय

आर्थिक सिद्धांत अवधारणाओं एवं सिद्धांतों को दर्शाते हैं, जिनका उपयोग कुछ परिघटनाओं या घटनाओं के विश्लेषण एवं पूर्वानुमानन करने के लिए किया जाता है। समष्टि अर्थशास्त्र की विशेष शाखा की आवश्यकता इसलिए हुई, क्योंकि जो कुछ भी व्यक्तिगत इकाइयों के लिए पर्याप्त हो, वह समग्र रूप से अर्थव्यवस्था के लिए संभवत: पर्याप्त न हो। उदाहरण के लिए, कोई भी फर्म श्रमिकों को आवश्यकतानुसार काम पर रख सकती है। अत: किसी एक फर्म द्वारा श्रम की माँग में वृद्धि का वेतन दर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, किंतु किसी देश में श्रम संबंधी मांग में वृद्धि होने से श्रम की कमी और वेतन दर में वृद्धि होगी। वर्ष 2022 के वैश्विक ऊर्जा संकट के दौरान अधिकांश देशों ने मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि और मुद्रा आपूर्ति में कटौती जैसी नीतियों को लागू किया। समष्टि अर्थशास्त्रीय सिद्धांत इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अर्थशास्त्रियों एवं नीति-निर्माताओं को स्थिति की व्याख्या करने व उचित नीति उपायों को अभिकल्पित करने के लिए मार्गदर्शन देता है। इस सन्दर्भ में 'पारंपरिक और केन्जियन' दो प्रमुख विचारधाराएं हैं, जिन्होंने आर्थिक परिघटनाओं की भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ की हैं।

### अध्याय का विहंगावलोकन

#### समष्टि-अर्थशास्त्रीय मत की विभिन्न विचारधाराएँ

समष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत कोई भी विचारधारा किसी अर्थव्यवस्था में समष्टि-अर्थशास्त्रीय चरों के व्यवहार के प्रति एक समान दृष्टिकोण रखने वाले विचारकों के समूह को दर्शाती है। चूँकि कोई भी एक समान दृष्टिकोण व्यापक आर्थिक समस्याओं से निपटने में अपर्याप्त रहा, इसलिए नयी अवधारणाओं का आविर्भाव हुआ, जैसे–1970 के दशक की आर्थिक परिस्थितियों के कारण पारंपरिक अर्थशास्त्र की प्रतिक्रियास्वरूप नव पारंपरिक तथा फिर एक नई विचारधारा नव केन्जियन अर्थशास्त्र का उदय हुआ। पारंपरिक अर्थशास्त्र के अनुसार किसी अर्थव्यवस्था में आर्थिक चरों (वेतन, कीमतें और ब्याज दरें आदि) के स्तर बाजार शक्तियों के माध्यम से नियंत्रित होते हैं, जैसे–उत्पादन एवं नियोजन में आवधिक उतार-चढ़ाव आर्थिक चरों को प्रभावित करते है। एडम स्मिथ, डेविड रिकार्डो, थॉमस माल्थस आदि पारंपरिक अर्थशास्त्रियों में प्रमुख हैं। किंतु जॉन मेनार्ड कीन्स, एक ब्रिटिश अर्थशास्त्री, ने पारंपरिक विचारों का विरोध किया और बताया कि मंदी कारक परिस्थितियों में सरकार को बाजार में सक्रिय रूप से हस्तक्षेप करना चाहिए। यह नयी विचारधारा केन्जियन विचारधारा (Keynesian school) कहलाई। इसके अनुसार एक अर्थव्यवस्था में संभावित उत्पादन की तुलना में कम उत्पादन होने की स्थिति में, इस अंतर को राजकोषीय एवं मौद्रिक नीति हस्तक्षेपों की सहायता से समाप्त किया जा सकता है।

पारंपरिक विचारधारा, जिसका उदय 18वीं और 19वीं शताब्दी के मध्य हुआ, पूर्ण रूप से लचीली कीमतों और वेतन संबंधी अवधारणा पर निर्भर करते हुए बाजार में स्वत: समायोजन पर बल देती थी, किंतु यह पारंपरिक विचारधारा सन 1930 के दशक की महामंदी को समझाने और समझने में विफल रहीं। सभी प्रमुख उन्नत देश इस मंदी से प्रभावित हुए तथा लगभग एक चौथाई श्रम-बल बेरोजगार हो गया था। इसी पृष्ठभूमि में जॉन मेनार्ड कीन्स ने अपने विचारों अर्थात केन्जियन सिद्धांतों को प्रस्तुत किया। उन्होंने पारंपरिक सिद्धांत में स्वेच्छा व्यापार (laissez-faire) अर्थव्यवस्था की अवधारणा की आलोचना करते हुए माँग एवं नियोजन बढ़ाने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप का पक्ष समर्थन किया। बाद में दोनों विचारधाराओं को एकीकृत करके नव पारंपरिक विश्लेषण का उदय हुआ, जो उत्पादों एवं मुद्रा बाजारों के सामान्य संतुलन की प्रक्रिया की व्याख्या करता है। तत्पश्चात पोस्ट-केन्जियन विकास मॉडल की कुछ विशिष्ट कमियों को दूर करने के लिए रॉबर्ट एम. सोलो ने नव पारंपरिक विकास मॉडल प्रस्तुत किया।

मुद्रास्फीतिजनित मंदी के लिए केन्जियन सिद्धांतों द्वारा उचित व्याख्या न होने के कारण आर्थिक व्यवहार के नए स्पष्टीकरण की खोज हुई। इस प्रकार रॉबर्ट ई लुकास, एक अमेरिकी अर्थशास्त्री,

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com



ने पारंपरिक अवधारणाओं को पुनर्जीवित कर प्रचलित केन्जियन अवधारणा को चुनौती दी। अर्थव्यवस्था में मूल्य स्तर और वेतन दर के लचीलेपन की अवधारणा, वास्तविक एवं मौद्रिक क्षेत्रों का द्विभाजन, मुद्रा की तटस्थता, नियोजन और कीमतों के निर्धारण में माँग एवं आपूर्ति द्वारा निभाई गई भूमिका जैसे कुछ मुद्दों पर पारंपरिक और केन्जियन विचारधाराएँ भिन्न थीं। वर्तमान में दो प्रमुख विचारधाराएँ–न्यू-क्लासिकल अर्थशास्त्र और न्यू-केन्जियन अर्थशास्त्र प्रचलन में हैं।

## पारंपरिक सिद्धांत के मूल अभिलक्षण

पारंपरिक सिद्धांत के मूल अभिलक्षण हैं–

1. पारंपरिक अर्थशास्त्री बाजार तंत्र की अनुकूलन प्रवृत्तियों में विश्वास करते थे।
2. पारंपरिक अर्थशास्त्री laissez-faire के दर्शन में विश्वास करते थे, जिसके अनुसार बाजार तंत्र पर सरकार का हस्तक्षेप न्यूनतम होना चाहिए।
3. एडम स्मिथ ने 'अदृश्य हाथ' की अवधारणा से दर्शाया कि यदि हर व्यक्ति अपने हित में काम करे, तो अर्थव्यवस्था सुचारु रूप से कार्य करेगी।
4. कीमतें और वेतन दरें लचीली होती हैं, जो आपूर्ति और माँग जैसे कारकों पर निर्भर करती हैं।
5. बाजार में पूर्ण प्रतिस्पर्धा होने पर बाजार सुचारु रूप से कार्य करता रहता है।
6. उत्पादन लोगों की आय में वृद्धि करता है, जिससे माँग उत्पन्न होती है।
7. मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि उत्पादन के स्तर को प्रभावित नहीं करती है, बल्कि यह विनिमय का माध्यम है।

## उत्पादन और नियोजन का निर्धारण

पारंपरिक सिद्धांत निम्न अवधारणाओं मान्यताओं पर आधारित है–

- फर्म और कर्मचारी आशावादी होते हैं।
- उनके पास पूर्ण जानकारी होती है तथा
- वे प्रतिस्पर्धी (परिपूर्ण) बाजारों में काम करते हैं।

पूर्ण प्रतिस्पर्धा में लाभ अधिकतम करने वाली फर्मों के लिए श्रम की माँग इस प्रकार है–

$\Rightarrow$ P = W/MPN

जबकि P उत्पाद की कीमत, W अंकित वेतन और MPN श्रम का सीमान्त उत्पाद है।

$\Rightarrow$ MPN = W/P

उपरोक्त समीकरण दर्शाता है कि श्रम का सीमांत उत्पाद वास्तविक वेतन (W/P) के बराबर होता है। अत: वास्तविक वेतन के संदर्भ में श्रम माँग वक्र और कुछ नहीं, बल्कि श्रम का सीमांत उत्पाद ही होता है।

$$\Rightarrow MPN_d = f(W/P)$$

श्रम की आपूर्ति वास्तविक वेतन से सकारात्मक रूप से भिन्न होती है। व्यक्तिगत श्रम अपनी उपयोगिता को अधिकतम करता है, जिसे निम्न प्रकार से दर्शाया जाता है–

$$\Rightarrow N_s = g(W/P)$$

## मुद्रा-परिमाण सिद्धांत

मुद्रा की माँग और मुद्रा की आपूर्ति की परस्पर क्रिया मुद्रा बाजार के अस्तित्व के लिए उत्तरदायी है। मुद्रा की माँग के पारंपरिक सिद्धांत या मुद्रा-परिमाण सिद्धांत (QTM) के अनुसार जनता के पास विद्यमान मुद्रा की मात्रा और मूल्य स्तर के बीच एक आनुपातिक संबंध होता है। पूर्ण नियोजन की पारंपरिक अवधारणा के अनुसार उत्पादन स्तर ज्ञात होता है

$$M.V = P.T$$

जबकि M मुद्रा आपूर्ति की मात्रा, V मुद्रा के संचलन का वेग, P औसत मूल्य स्तर तथा T औसत आकार के लेन-देन की संख्या और आय स्तर के लिए परोक्षी है। उपरोक्त समीकरण को निम्न रूप से भी लिखा जाता है–

$$P = \frac{V}{T} M$$

इसमें V और T स्थिरांक हैं, जो दर्शाते हैं कि मुद्रा आपूर्ति सीधे मूल्य स्तर को प्रभावित करती है। इसी समीकरण को निम्न रूप से भी व्यक्त किया जाता है–

$$MV = PY$$

जहाँ, M मुद्रा की आपूर्ति, V मुद्रा का वेग, P उत्पादन मूल्य और Y वास्तविक उत्पादन स्तर है।

अधिकांश अर्थशास्त्रियों द्वारा पारंपरिक सिद्धांत को मान्यता दी गयी है, किंतु केन्जियन अर्थशास्त्री और मुद्रावादी इसकी आलोचना करते हुए तर्क देते हैं कि कीमतों के स्थिर होने पर पारंपरिक सिद्धांत अल्पावधि में विफल हो जाता है। यह भी दर्शाया गया है कि मुद्रा का वेग कालांतर में नियत नहीं रहता है। फिर भी मुद्रास्फीति को समझने और उसे नियंत्रित करने के सन्दर्भ में पारंपरिक सिद्धांत उपयोगी है।

## से (Say) का बाजार नियम

से (Say) के नियम के अनुसार पूरे उत्पादित निष्पाद को खरीदने के लिए पर्याप्त आय हमेशा विद्यमान रहेगी, ताकि स्वेच्छा-व्यापार अनुस्थापन के तहत कोई अधिशेष न बचे। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अर्थव्यवस्था में बड़ी व्यापारिक मंदी नहीं होनी चाहिए। मुद्रा के मुक्त प्रवाह में किसी हस्तक्षेप के कारण ही ऐसा होता है। इस प्रकार, से (Say) का नियम पारंपरिक अर्थशास्त्र के स्वेच्छा-व्यापार अनुस्थापन का समर्थन करता है। यह नियम कीमतों में पूर्ण लचीलेपन की

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



अवधारणा पर बहुत अधिक निर्भर है, जिसके अंतर्गत जितनी भी मात्रा में उत्पादन होता है, उसे कीमतों में गिरावट (या वृद्धि) के माध्यम से बाजार में बेचा जा सकता है। यह नियम वस्तु-विनिमय अर्थव्यवस्था के साथ-साथ मुद्रा अर्थव्यवस्था में भी मान्य है।

इस नियम के अनुसार निष्पाद के उत्पादन से प्राप्त आय हमेशा कुल माँग, यथा उपभोग एवं निवेश पर व्यय की जाती है। दूसरे शब्दों में, धन कभी जमा नहीं होता है और मुद्रा या व्यय प्रवाह (MV) सदैव तटस्थ रहता है। किंतु वर्तमान में इसकी वैध ता पर तब संदेह होता है, जब उत्पादन भविष्य की अपेक्षाओं और माँग की प्रत्याशाओं पर आधारित होता हो या कुछ अत्युत्पादन होना तय होता है। यदि उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा उपभोग के लिए प्रयोग कर यदि शेष बचे हुए को निवेश किया जाता है, तो से (Say) का नियम मान्य होता है।

## पारंपरिक द्विभाजन

मुद्रा-परिमाण सिद्धांत (QTM) मुद्रा की आपूर्ति और मूल्य स्तर के बीच संबंध को दर्शाते हैं। समष्टि-अर्थशास्त्रीय चरों पर मुद्रा आपूर्ति में होने वाले परिवर्तन के प्रभाव को निम्न प्रकार से दर्शाया गया है–

### AD-AS साम्यावस्था

किसी भी अर्थव्यवस्था में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद, वास्तविक पूँजी स्टॉक और नियोजन को वास्तविक चर की संज्ञा दी जाती है। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद को एक वर्ष, तिमाही या माह आदि विशिष्ट अवधि में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं की मात्रा के रूप में परिभाषित किया जाता है, जबकि वास्तविक पूँजी स्टॉक को किसी विशिष्ट समय पर उपलब्ध मशीनों एवं संरचनाओं की मात्रा के रूप में परिभाषित किया जाता है। अंकित चर मौद्रिक मूल्य, जैसे मूल्य स्तर के संदर्भ में व्यक्त किए जाते हैं।

उत्पादन और नियोजन के पारंपरिक सिद्धांत के अनुसार मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन अंकित चरों पर प्रभाव डालता है, किंतु वास्तविक चरों को प्रभावित नहीं करता है। कीमतों एवं वेतन के लचीलेपन से ज्ञात होता है कि मुद्रा की आपूर्ति में परिवर्तन मूल्य स्तर और मौद्रिक वेतन एवं अंकित ब्याज दरों जैसे अंकित मूल्यों को प्रभावित करता है, जबकि वास्तविक चर अप्रभावित रहते हैं। मुद्रा आपूर्ति और अंकित चरों में परिवर्तन से वास्तविक आर्थिक चरों की स्वतंत्रता ही 'पारंपरिक द्विभाजन' कहलाती है।

### मुद्रा की तटस्थता

मुद्रा आपूर्ति का विस्तार होने से वास्तविक वेतन, नियोजन और उत्पादन के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं होता, किंतु अंकित वेतन दर और मूल्य स्तर में वृद्धि हो जाती है। मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तन से वास्तविक आर्थिक चरों की ऐसी स्वतंत्रता को ही मुद्रा की 'तटस्थता' कहा जाता है। मुद्रा की तटस्थता के लिए एक निर्णायक सीमा होती है। यह पूर्ण नियाजन साम्यावस्था से प्राप्त एक मूल परिणाम होता है, जो कि कीमतों के पूर्ण लचीलेपन पर आधारित होता है। यदि मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि (उच्च कीमतों के परिणामस्वरूप) का कोई वास्तविक प्रभाव नहीं होता, तो किसी भी अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की भूमिका नगण्य रहती है।

### बचत-निवेश साम्यावस्था

पारंपरिक विचारधारा मुद्रा की माँग को लेन-देन के सन्दर्भ में महत्त्व देती है। अत: पारंपरिक सिद्धांत द्वारा मुद्रा की आपूर्ति और माँग ब्याज की संतुलन दर का निर्धारण नहीं होता। चूँकि मुद्रा की मात्रा में वृद्धि वास्तविक ब्याज दर को प्रभावित नहीं करती, जिससे बचत और निवेश में कोई परिवर्तन नहीं होता। इससे ज्ञात होता है कि पूँजी बाजार संतुलन (या बचत-निवेश साम्यावस्था) पर मुद्रा की आपूर्ति बढ़ने का कोई प्रभाव नहीं होता। इससे पूर्ण-नियोजन संतुलन का स्तर अपरिवर्तित रहता है। मुद्रा की आपूर्ति की वृद्धि कीमतों में वृद्धि करती है, जिससे निवेश में नाममात्र ही वृद्धि होगी। तथापि, पारंपरिक सिद्धांत के अनुसार इस प्रकार की वृद्धि कीमतों में वृद्धि के अनुपात में होगी, जिससे वास्तविक रूप में निवेश व्यय पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

## दीर्घावधि बनाम अल्पावधि

उत्पादन के सन्दर्भ में प्रक्रियाओं का व्यवहार अल्पकाल और दीर्घकाल के बीच भिन्न-भिन्न होता है। आपूर्ति या माँग में परिवर्तन से दीर्घावधि में कीमतें लचीली होती हैं, जबकि अल्पावधि में ऐसा नहीं होता। पारंपरिक सिद्धांत दीर्घावधि में लागू माना जाता है, जबकि अल्पावधि में किसी भिन्न विश्लेषणात्मक प्राधार की आवश्यकता हो सकती है। केन्जियन मॉडल अल्पावधि में अधिक व्यवहार्य होता है। अल्पावधि और दीर्घावधि में कीमतों के व्यवहार का निर्धारण दिए गए चित्र की सहायता से समझेंगे। किसी अर्थव्यवस्था में कुल आपूर्ति कंपनियों द्वारा की गयी वस्तुओं एवं सेवाओं की कुल राशि होती है, जबकि सकल माँग खरीदी गई वस्तुओं एवं सेवाओं की कुल मात्रा को निर्देशित करती है।

किसी भी मानक AS-AD मॉडल में उत्पादन (Y) X-अक्ष पर दर्शाया जाता है और मूल्य (P) Y-अक्ष पर होता है। दीर्घावधिक कुल आपूर्ति वक्र (ASLR), जो कि अर्थव्यवस्था के संभावित उत्पादन (पूर्ण-नियोजन उत्पादन) को दर्शाता है, Y* पर किसी ऊर्ध्वाधर रेखा द्वारा दर्शाया जाता है। अल्पावधिक आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर अवनत ($AS_0$) है। आपूर्ति और माँग की परस्पर क्रिया उत्पादन के संतुलन स्तर ($Y_0$) को निर्धारित करती है। अल्पावधि में आपूर्ति वक्र ($AS_0$ से $AS_1$ तक) में किसी बाहरी खिसकाव के परिणामस्वरूप उत्पादन में वृद्धि ($Y_0$ से $Y_1$ तक) और कीमतों में गिरावट ($P_0$ से $P_1$ तक) आती है। उक्त AD वक्र ($AD_0$ से $AD_1$ तक) में किसी बाहरी खिसकाव के परिणामस्वरूप उत्पादन में तो वृद्धि ($Y_0$ से $Y_1$ तक) होती है, किंतु कीमतें भी बढ़ ($P_0$ से $P_1$ तक) जाती हैं।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



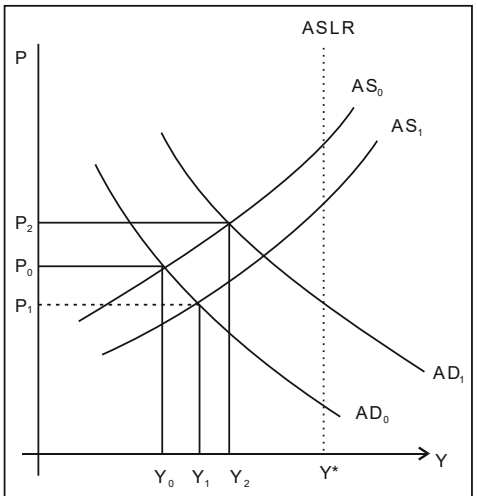


*दीर्घावधि और अल्पावधि में कीमतों का निर्धारण*

मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि AD वक्र को दाईं ओर ले जाएगी, जिससे कीमतों और आय में वृद्धि होगी। इसके विपरीत, मुद्रा की आपूर्ति में कमी के परिणामस्वरूप AD वक्र बाईं ओर खिसक जाएगा, जिससे कीमतों और आय दोनों में कमी आएगी। पारंपरिक सिद्धांत के अनुसार मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि वास्तविक उत्पादन को प्रभावित किए बिना कीमतों में वृद्धि कर देती है। यह नियम दीर्घावधि के लिए ही उपयुक्त है।

## बोध प्रश्न

**प्रश्न 1. पारंपरिक सिद्धांत के महत्त्वपूर्ण अभिलक्षणों को लिखिए।**

**उत्तर**–पारंपरिक सिद्धांत के महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण इस प्रकार हैं–

**1. व्यष्टि-अर्थशास्त्रीय मुद्दे**–पारंपरिक अर्थशास्त्रियों ने व्यष्टि-अर्थशास्त्रीय मुद्दों पर ही अधिक बल दिया। वे बाजार तंत्र की अनुकूलन प्रवृत्तियों पर विश्वास करते थे। इनके अनुसार मूल्य स्तर, वेतन दर और उत्पादन स्तर जैसे चर बाजार शक्तियों (आपूर्ति एवं माँग) द्वारा ही नियंत्रित किए जाते हैं।

**2. स्वेच्छा व्यापार**–पारंपरिक अर्थशास्त्री laissez-faire दर्शन में विश्वास करते थे, जिसके अनुसार व्यापारिक मुद्दों में सरकार का हस्तक्षेप न्यूनतम होना चाहिए। एक प्रमुख अर्थशास्त्री एडम स्मिथ मानते थे कि सरकार को तीन मुख्य कर्तव्यों (राष्ट्र की रक्षा, न्याय प्रबंधन, अवसंरचना एवं शिक्षा आदि) पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

**3. अदृश्य हाथ (Invisible hand)**–एडम स्मिथ द्वारा प्रस्तुत की गयी 'अदृश्य हाथ' की अवधारणा के अनुसार यदि हर व्यक्ति अपने हित में काम करे, तो अर्थव्यवस्था भली-भाँति काम करेगी। अदृश्य हाथ के दर्शन ने पारंपरिक अर्थशास्त्रियों को आर्थिक अभिकर्ताओं के व्यवहार संबंधी विश्लेषण तक सीमित कर दिया और वे आर्थिक अभिकर्ताओं और संपूर्ण अर्थव्यवस्था के हितों के बीच किसी भी प्रकार के संघर्ष नहीं समझ पाए।

**4. सतत बाजार समाशोधन**–व्यष्टि अर्थशास्त्र के अनुसार संतुलन मूल्य, आपूर्ति और माँग बराबर होने के स्तर पर निर्धारित किया जाता है। किसी वस्तु की माँग अधिक होने पर कीमत में वृद्धि तथा आपूर्ति अधिक होने पर कीमत घटती है। यह सिद्धांत वेतन दर पर भी लागू होता है। श्रम की आपूर्ति उसकी माँग से अधिक होने पर वेतन दर में श्रम की आपूर्ति उसकी माँग के समान होने तक गिरावट आती है।

**5. पूर्ण प्रतिस्पर्धा**–पारंपरिक अर्थशास्त्रियों के मतानुसार बाजार में पूर्ण प्रतिस्पर्धा होने की स्थिति में ही बाजार सुचारु रूप से कार्य करता है। इस तर्क के आधार पर पारंपरिक अर्थशास्त्रियों ने 'व्यापार चक्र' की संभावना पर विशेष ध्यान नहीं दिया।

**6. से (Say) का बाजार नियम**–पारंपरिक अर्थशास्त्रियों ने अर्थव्यवस्था के आपूर्ति पक्ष पर अधिक बल दिया। प्रमुख पारंपरिक अर्थशास्त्री जे.बी. से (J.B. Say) के अनुसार, ''आपूर्ति अपनी माँग स्वयं उत्पन्न करती है। उत्पादन बढ़ने से आय का प्रवाह होता है, जिससे माँग उत्पन्न होती है।'' इस प्रकार, पारंपरिक दृष्टिकोण से अर्थव्यवस्था में माँग के अभाव की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है।

**7. मुद्रा की तटस्थता**–पारंपरिक अर्थशास्त्री मानते हैं कि किसी भी अर्थव्यवस्था की आर्थिक संवृद्धि उत्पादन और प्रौद्योगिकीय प्रगति के कारकों में वृद्धि पर निर्भर करती है। पैसा विनिमय के माध्यम के रूप में आर्थिक अभिकर्ताओं के मध्य लेन-देन की सुविधा ही प्रदान करता है। इसका अर्थ है कि मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि उत्पादन के स्तर को प्रभावित नहीं करती। पारंपरिक अर्थशास्त्रियों ने उत्पादन एवं नियोजन जैसे वास्तविक चरों को तय करने में वास्तविक कारकों की भूमिका पर बल दिया।

**प्रश्न 2. न्यू-क्लासिकल अर्थशास्त्र के मुख्य अभिलक्षण क्या हैं? स्पष्ट करें।**

**उत्तर**–न्यू-क्लासिकल अर्थशास्त्र के सिद्धांत केनेन्सियन अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के साथ-साथ आधुनिक अर्थशास्त्र का आधार हैं। न्यू-क्लासिकल अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि किसी उत्पाद के मूल्य के बारे में उपभोक्ता की धारणा उसकी कीमत का प्रेरक कारक है। न्यू-क्लासिकल अर्थशास्त्रियों का मानना है कि उपभोक्ता की पहली चिंता व्यक्तिगत संतुष्टि को अधिकतम करना है, जिसे उपयोगिता भी कहा जाता है, इसलिए वे किसी उत्पाद या सेवा की उपयोगिता के मूल्यांकन के आधार पर खरीदारी का निर्णय लेते हैं। यह सिद्धांत तर्कसंगत व्यवहार सिद्धांत से मेल खाता है, जो बताता है कि लोग आर्थिक निर्णय लेते समय तर्कसंगत रूप से कार्य करते हैं। दूसरे शब्दों में, लोग अपनी धारणा के आधार पर दो विकल्पों के बीच तार्किक विकल्प चुनते हैं कि कौन-सा विकल्प उनके लिए बेहतर है।

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com